रात्री क्लास ओम शान्तिः 20-8-68

बच्चो को नशा चढ़ा हुआ है कि हम युध के मैदान पर है। ज्ञान के हथियार तो ज्ञान स्वरूप आद ही है। ज्ञान के हथियार अर्थात पुआईन्ट। यह बुधी मे धारन करने की बाते है। यह तो समझते होगे नां कि हमारी स्थापना ड्रामा प्लान अनुसार हो रही है। देवी देवता धर्म का सेपलिंग कहीं नां कहीं पर लगता ही रहता है। जीत भी होती है तो कोई हार भी खाते है। आते है फिर माया पकड लेती है तो फिर आना बन्द कर देते है। बच्चो को उदासहोने की दरकार नही है। पाण्डवो का चीफ कमाण्डर कहे वां रक्षक कहे। रक्षक नाम बहुत अच्छा है। रावण से बचाते रहते है। ओय ही है बचाने। बच कर ही चलना। बाकी यह तो जरूर है कि हार जीत तो चलती ही रहती है। हार जीत लडाई वालो की होती है। यहां माया की युध है गुप्त। कोई भी नही जानते है। तुम हो बहुत थोडे, रावण की सम्प्रदाय तो बहुत है। सर्विस बुधी को नही पाती है तो बच्चो को खयाल होता है परन्तु बापतो कहते है कि तुम तो अपना पुरुषार्थ करते रहो। तुमको तो जो तुम्हारी रेसआः है वो प्राप्त मिलनी ही है। दिन प्रति दिन तो दुनियां मे दुःख बढ़ते ही जावेंगे। इस तरफ अथाह दुःख और दुसरी तरफ तो दुःखो का नाम भी नही तो मनुष्य विचार करेंगेकि सुख तरफ ही जाना चाहिये। सारी इस दुनियां को ही विषय सागर कहा जाता है। वो तो है खीर सागर यहां पर कितना दुःख है। तुम बच्चे समझ गये हो। समझ कर सो नही जाना है। अच्छी रीती समझाना होता है। शिव बाबा ब्रहमा दवारा सुख की स्थापना कर रहे है। ब्रहमा के साथ ही फिर ब्राहम्ण भी है। ब्रहमा का नाम सुना तो है नां। तुम अच्छी रीती समझो तो तुम सब ही ब्रहमा की सन्तान हो। शिव बाब की आत्मओं का सिजरा तो सूक्ष्म है। यहां है फिर ब्रहमा तो उनको तो सभी जानते है। ब्रहमा बिना दुनियां पैदा हो नही सकती है। वो है आत्माओं का पिता। यह है फिर शरीरो का। प्रजापिता ब्रहमा के ऐडाप्टिड चिलड्रेन्स होते है। मनुष्य सृष्टी का तो बाप है ही प्रजापिता ब्रहमा। नही तो प्रजा कहां से आई। आत्मांय तो सभी वहां रहती है। फिर पिछाडी मे सभी आत्मायें यहां पर आकर उपस्थित होती है। पहले सिजरा आत्माओं का फिर प्रजापिता ब्रहमा का मनुष्य सिष्टी का। आत्माओं का सिजरा भी चित्र मे दिखाते है। प्रजापिता ब्रहमा आदीदेव को तो सब जानते है। अब इनका भी सिजरा कैसे दिखावेंगे। पहले प्रजापिता ब्रहमा ही आद मे लक्ष्मी बनता है। जैसे ब्रहमा से विष्णु दिखाते है। देवताओं का भी सिजरा है नां। जन्म शुरु कहां से करे? नई दुनियां किसको कहे? यह है गुप्त वो है प्रतयक्ष। विष्णु पुरी तो वास्विक नाम है। बाप आकर सतयुग की स्थापना करते है। ब्रहमा और विष्णु मे एक जन्म का फर्क है। बुधी चलती है नां। दुनियां तो कुछ नही जानतीहै। तुम ही सब कुछ जानते हो। तुमको भी किसने समझाया मोस्ट बिलवेड बाप ने। बेहद का बाप बेहद के बच्चे के लिये सोगात ले आते है। सुख की। और तो सब दुःख मे है। सबको शान्तिः और सुखरूपी धन चाहिये। धन बिना किसीको सुख मिल नही सकता है। मन की शान्तिः माना ही आत्माओं की शान्तिः। बच्चो को तो समझाने की मार्जिन बहुत है। पत्थर फेंकते रहो जो कि पूछे कि यह क्यो बनाया है। क्या है। तुम समझाने के लिये कितनी मेहनत करते हो। ऐसा कोई साधु सन्त महात्मा नही नई और पुरानी दुनियां कैसे होती है यह कोई की भी बुधी मे नहीहै। तुम समझा सकते हो। इसलिये ही बाबा मेगजीन पर चित्र बनवा रहे है। तो बाहर मे ले जाना भी सहज ही होगा। परन्तु वो तो लोग तो लक्ष्मी के चित्र से इतना नही समझेंगे। उनके लिये तो फिर गोला झाड आद है। बाबा को शौक है बहुत। यह तो चित्र अन्धो की लाठी। बच्चे जब होशियार हो जावे देहअभिमान निकल जावे। पुरुषार्थ अब यह करना है कि पिछाडी मे शरीर छोडे तो कुछ भी याद नही आवे। सिवाय एक बाप के। अगर बच्चो आद मे मोह होगा तो वो जरूर याद आवेगे। कुछ भी याद नही रहे तो ही ऊंच पद पा सकते हो। बाकी प्रजा तो ढेर बनेगी। कोई भी रहेगे ही नही जो कि तुम्हारे म्यूजयम वां प्रदर्शनी मे आवेगें नही। जितना शोहोगा उतना ही बहुत आवेंगे। बाबा तो कहते है कि 6×9 के ट्रान्सलाईट के चित्र बनाओ। वो ही मूर्ती घर मे हो ही मन्दिर में मूरत मन्दिर का कितना भभका हो जाता है। वेज तो हमेशा लगा हुआ ही हो। ईस पर ही बैठ समझासोगुडनाईट